आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : दसवां अंक : ग्यारहवां मार्च-2013

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

4 ऐहे ते देश पराया ओए अजणा

5 सुखवों-दुखवों की नगरी
(स्वामी जी महाराज की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(16 पी.एस. आश्रम राजस्थान)

23 सवाल-जवाब
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

34 धन्य अजायब
सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। फोन - 0 99 50 55 66 71 व 0 98 71 50 19 99

उपसम्पादक : माया रानी **विशेष सलाहकार** : गुरमेल सिंह नौरिया - 0 99 28 92 53 04

सहयोग : रेनू सचदेवा, सुमन आनन्द व परमजीत सिंह

प्रकाशन दिनांक 1 मार्च 2013 -132- मूल्य - पाँच रुपये

ऐहे ते देश पराया ओऐ सजणा

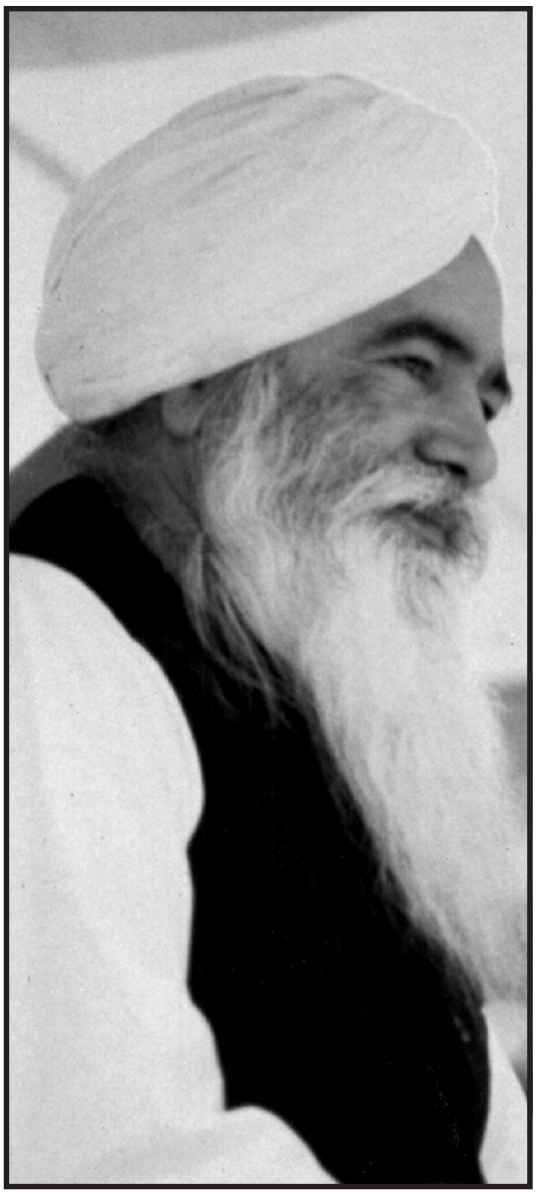

ऐहे ते देश, पराया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना, पाया ओऐ सजणा
ऐहे ते देश, पराया ओऐ सजणा,

आया जो ऐत्थे, सबने तुर जाणा,
रहना ना ऐत्थे, कोई राजा राणा,

जिंदगी बिरछ दी, छाया ओऐ सजणा
तू प्यार क्यों ऐना .....

कोई दिन ऐत्थे, रैण बसेरा,
झूठे सब नाते, कोई ना तेरा,

सतगुरु ने, समझाया ओऐ सजणा
तू प्यार क्यों ऐना .....

करके सिमरन, मन समझा लै,
भुल्लां गुरु तों, माफ करा लै,

दाते दा नां क्यों, भुलाया ओऐ सजणा
तू प्यार क्यों ऐना .....

पल्ला गुरु, कृपाल दा फड़ लै,
भवसागर तों, 'अजायब' तूं तर लै,

झूठा जगत, झूठी माया ओऐ सजणा
तू प्यार क्यों ऐना .....

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सुखों-दुखों की नगरी

स्वामी जी महाराज की बानी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

मैं अपने गुरुदेव परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में एक बार नहीं करोड़ों बार नमस्कार करता हूँ, जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर बड़ी भारी दया-मेहर की। रविदास जी कहते हैं कि मैं उस शहर में से आया हूँ जहाँ कोई गम नहीं, अंधेरा नहीं प्रकाश और नूर है। कबीर साहब कहते हैं कोई महरम ही हमारे घर को जान सकता है समझ सकता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते हैं, ''कूंजो की सार कूंजे ही जानती हैं, चिड़ियों को क्या ज्ञान है कि कूंजे किस वतन से आती हैं?'' इसी तरह सन्तों के वतन को सन्त ही जानते हैं। आम कहावत है कि प्रभु भक्तों के बस में है।

मैं आमतौर पर आपको यह कहानी हमेशा ही बताया करता हूँ कि परमात्मा कृपाल ने इस गरीब आत्मा पर दया-मेहर की। वह महापुरुष पच्चीस साल होका देते रहे, ''कोई इंसान बने भगवान इंसान की तलाश में है।'' जिन लोगों ने अपना बर्तन बना लिया, जिन आत्माओं ने उसके बैठने के लिए जगह बना ली उसे प्यार से अंदर से आवाज लगाई कि तू जहाँ है मुझे मिल। वह प्यार में खिंचा हुआ वहाँ आया। जिसने जिस तरह पुकारा जिसका जैसा बर्तन था वह उसे वैसी दात देता रहा।

आमतौर पर हम दुनियां के जीव सन्तों से 'नाम' लेते हैं अभ्यास भी करते हैं और सतसंग भी सुनते हैं लेकिन गुरु से मिलने के लिए, नाम की कमाई गिनती के लोग ही करते हैं। कोई

कहता है कि हमारे घर में बीमारी, बेरोजगारी न आ जाए हमारे रिश्तेदार हमसे नाराज़ न हो जाएं! हम जिन देवी-देवताओं को मानते हैं जिन्हें हमारे बड़े-बुजुर्गों ने भी नहीं देखा कहीं वे नाराज न हो जाएं उनसे डरते हुए भक्ति करते हैं। जिस तरह राजस्थान के लोग साँप की पूजा प्यार की खातिर नहीं सिर्फ उसके डंक के जहर से डरते हुए करते हैं।

जब परमात्मा कृपाल ने चोला छोड़ा मैं उस समय उदास होकर कई जगह रहा। उस पड़ाव में गांव किल्लेयांवाली भी आया। मैं किल्लेयांवाली में जहाँ रहता था वहाँ पर लोग साँप को पूजने के लिए आते थे। एक मियाँ-बीवी में बहुत प्यार और उमंग था कि हम भी साँप की पूजा करेंगे। उन्होंने सेवियाँ वगैरहा ले ली, मालिक की ऐसी मौज हुई कि वे जब चलने लगे तो उन्हें साँप नज़र आ गया। उन्होंने थाली नीचे रखकर साँप को मार दिया। मैं शोर ही मचाता रहा कि तुम तो इसकी पूजा करने के लिए घर से आए थे। जो लोग ऐसी भक्ति करते हैं उनके पास क्या जवाब हो सकता है?

सन्त गरीब नवाज होते हैं। कोई गरीब बने सन्त उसे सब कुछ देने के लिए तैयार रहते हैं। गरीब उसे नहीं कहते जिस बेचारे के पल्ले कुछ न हो और वह सड़कों पर मारा-मारा अपने बुरे कर्मों का फल भोगता फिरता है। असल में गरीब वह है जिसे परमात्मा ने बहुत धन-पदार्थ और हर किस्म की सहूलियत दी हो लेकिन वह यह कहे कि सब कुछ परमात्मा का दिया हुआ है। मैं परमात्मा का दिया हुआ ही खा रहा हूँ।

बड़ा गरीब वह है जिसे पता लग जाए कि हम रूहानियत में दिवालियेपन पर आ चुके हैं; हमारे पल्ले रूहानियत का कुछ भी नहीं है। हम विषय-विकारों के वश में होकर एक जुआरी की तरह

सब कुछ हार चुके हैं। हमारी पूंजी काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के पाँचों डाकुओं ने लूट ली है। जिसे यह पता लग जाए कि मैं तो एक जुआरी की तरह खाली हाथ फिर रहा हूँ वह गरीब होकर आजिज होकर उस महान हस्ती के आगे पुकार करता है बेशक उसने उस महान हस्ती को देखा भी न हो।

सन्त हमें कर्मकांड में नहीं लगाते और न ही सन्त कोई धर्म या समाज चलाने के लिए आते हैं। सन्तों का यह मिशन है कि उन्हें परमात्मा की तरफ से जो आत्माएं सौंपी जाती हैं वे उनकी प्यास बुझाकर उन आत्माओं को परमात्मा के साथ जोड़कर उन्हें उनके निजघर सच्चखंड पहुँचा देते हैं। सन्त यही प्रचार करते हैं वे खुद इस पर अमल करते हैं और अपने प्यारे बच्चों को भी अमल करने के लिए ही प्रेरित करते हैं।

हमारा कोई मामूली रिश्तेदार भी अमीर हो तो हम उसका आदर करते हैं उसके साथ प्यार करते हैं कि यह वक्त पर हमारे काम आएगा अगर हम रूहानियत में अपनी गरीबी देख लें तो हम जरूर किसी ऐसे गुरु या सन्त की तलाश करेंगे और उसके आगे पुकार करेंगे कि हम निर्बल हैं कमजोर हैं हमें आपके सहारे की जरूरत है; वह सहारा देने के लिए ही आता है।

मैं बताया करता हूँ कि ऐसी आत्माओं को बचपन से ही नींद कम आती है वे हमेशा ही अपनी कोई वस्तु खोई हुई महसूस करते हैं। वे बचपन से ही दुनिया के रसों-कसों में नहीं पड़ते। जिन्हें काम का चस्का लग जाता है वे बशर्म हो जाते हैं उन्हें नजदीक खड़ा हुआ आदमी भी दिखाई नहीं देता। उन्हें किसी छोटे-बड़े रिश्ते की परवाह नहीं होती। इसी तरह जीभ का स्वाद इन सभी चस्को से बुरा है। जिन्हें जीभ का स्वाद पड़ जाता है आप उन्हें जितने भी

अच्छे खाने बनाकर दे दें, वे उस खाने को अच्छा नहीं कहते क्योंकि यह उनके बस में नहीं उनकी आदत ही ऐसी बन चुकी है वे तृप्त नहीं हो सकते।

मैंने पंजाब से आकर यहाँ मांझूवास में जमीन खरीदी, यह जाटों का गांव था। उस समय इस इलाके को बीकानेर कहते थे। उस समय यहाँ पर एक तरफ से दो-दो महीने तक आँधी चलती थी। हो सकता है यहाँ पर बैठा हुआ आदमी शाम को रेत में ही दब जाए। जिन लोगों ने वह नजारे देखें हैं वे जानते हैं कि यहाँ के नजारे कैसे थे? आंधी बिना बुलाए ही आ जाती थी। कहावत हैः

ऐवें गल पे गई बीकानेर दी हनेरी।

यहाँ मेरा मिलाप धर्मचंद से हुआ। धर्मचंद ने मुझसे सवाल किया कि आप साधु है या स्वादु है? मैंने हँसकर कहा, ''मैं दोनों में से कोई नहीं हूँ अगर मैं स्वादु होता तो पंजाब में ही टिका रहता साधु भी नहीं हूँ क्योंकि मुझे अभी कोई रास्ता नहीं मिला है।'' गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं, ''वही शिष्य है जिसके अंदर ज्योत प्रकट है।'' पहली मंजिल पर पहुँचे हुए को चेला, शिष्य या सिक्ख कह लें उसके अंदर ज्योत प्रकट हो जाती है।

पूर्ण ज्योत जगे घट माहे तब खालस नहीं निखालस जाने।

खालस और निखालस में बहुत फर्क है। जिसके अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के झौंके उठते हैं वह निखालस है; जिसके अंदर पूर्ण ज्योत का विकास हो गया ये पांचो डाकु शान्त हो गए हैं वह खालसा बन गया है। ऐसा खालसा खुद भी तर जाता है और जो उसकी शरण में आते हैं वह उन्हें भी तार देता है। ब्रह्म तक पहुँचा हुआ ज्ञानी है क्योंकि सारे ज्ञान का सोमा ब्रह्म है। पांच

तत्व और तीनों गुणों का विकास यहीं से होता है। योगियों ज्ञानियों और बहुत सारे समाजों की यह आखिरी मंजिल है लेकिन पारब्रह्म में पहुँचा हुआ ही साधु है।

चाहे कोई पढ़ा-लिखा या अनपढ़ है हम लोग साधु सन्त के लफ्ज़ से धोखा खाते हैं। आमतौर पर जो लोग सामाजिक, धार्मिक रीति-रिवाजों में निपुण होते हैं, कोई मिशन चलाते हैं, किसी धर्म स्थान के रखवाले हैं; किसी ने भगवे लाल कपड़े पहने हुए हैं या जो लोग मांगते फिरते है हम लोग उनको भी साधु सन्त ही कहते हैं।

जब सरकार ने जनगणना की उस समय बावन लाख साधुओं की गिनती दर्ज हुई। सोचकर देखें! अगर दुनिया में इतने साधु हों तो शान्ति हो जानी चाहिए थी। हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, ईसाईयों के लड़ाई-झगड़े मिट जाने चाहिए थे। कबीर साहब कहते हैंः

सिंघो के लहंडे नहीं, हंसो की नहीं पात।
लालों की नहीं बोरियां, साध न चले जमात।

जिसने मन को दुनिया की तरफ से पलट लिया है साधना करके पारब्रह्म में पहुँच गया है वह साधु है अगर ऐसा साधु मिले तो हम उसके चरणों को हाथ लगाने के लिए तैयार हैं, ऐसा साधु भाग्य से मिलता है। सन्त वह है जिसका मिलाप सतपुरुष से हो जाता है वह सतपुरुष का ही रूप हो जाता है। जैसे हमें स्कूलों में मिडिल, मेट्रिक, बी.ए., एम.ए की डिग्रियां मिलती हैं इसी तरह परमार्थ में भी साधु-सन्तों की डिग्री है लेकिन हम इस लफ्ज़ की सही अर्थों में व्याख्या नहीं करते। हम साधु-सन्तों की परख करने की कोशिश ही नहीं करते कि क्या इसे साधु गति प्राप्त है, क्या यह सचमुच साधु बन गया है, क्या यह पारब्रह्म में पहुँच गया है?

महात्मा प्यार से समझाते हैं अगर हमें ऐसा साधु मिलता है तो हमारी जिंदगी को सहारा मिलता है, आत्मा को शान्ति मिलती है। ऐसे साधु के मंडल में रूहानियत की किरणें चलती हैं। हम अग्नि के पास बैठें तो वह हमें तपिश देती है। पानी के पास बैठने से हमें ठंडक महसूस होती है। हमें स्कूलों, कालेजों से तालीम मिलती है इसी तरह अगर हम नाम में रंगे हुए महात्मा के पास जाते हैं तो हमारी आत्मा को शान्ति मिलती है। चाहे हमने ऐसा साधु नहीं देखा होता लेकिन वह हमारी आवाज को सुनता है।

जब इस गरीब आत्मा ने अपनी गरीबी की दुहाई दी तो मेरे गुरुदेव परमात्मा कृपाल ने कृपा की वह खुद चलकर मेरे पास आए। जिस तरह रविदास ने राजा पीपा पर दया की। राजा पीपा के दिल में परमार्थ का शौक था। वह घर में मंदिर बनाकर पूजा किया करता था। पूजा करते हुए उसे आवाज़ आती कि पीपा! पूरा गुरु ढूंढ नहीं तो काल खाल उतार देगा। काल कोई लफ्ज़ नहीं यह एक ताकत है इसे जब भी कोई निगुरी आत्मा मिलती है तो यह उसके कर्मों के मुताबिक उससे खूब बदला लेता है। काल के राज्य में न्याय है, बदला है और सन्तों के राज्य में माफी है।

लोगों ने राजा पीपा को बताया कि इस समय कबीर साहब तो संसार में नहीं हैं रविदास जी हैं। उस समय गंगा का पर्व लगा हुआ था राजा पीपा प्यार से रविदास जी के पास गया। रविदास के दिल में दया आई कि यह एक राजा होकर मेरे पास आया है। मुझे इसे कुछ देना चाहिए। रविदास जी ने चमड़े की मश्क में से पानी निकालकर राजा पीपा से कहा, ''राजा! दोनों हाथ कर।'' मन कब वक्त हाथ से निकलने देता है। राजा पीपा ने सोचा यह एक चमार है और चमड़े की मश्क में से पानी निकाल रहे हैं। मैं एक क्षत्रिय

राजपूत हूँ अगर मैंने इनके हाथ का पानी पी लिया तो कहीं मैं भी चमार न बन जाऊँ? उसने खुली बाजू वाला कुर्ता पहना हुआ था। पानी नीचे ही जाने दिया मुँह के अंदर नहीं जाने दिया।

हम जितने ज्यादा जोश के साथ भजन में लगते हैं या सन्तों के पास जाते हैं मन भी अपने सारे हथियार सारी ताकत लेकर हमारे पीछे हो जाता है क्योंकि मन काल का एजेंट है इसकी ड्यूटी है कि कोई भी आत्मा गुरु भक्ति न कर पाए।

राजा पीपा ने महल में आकर धोबी को बुलवाया और कहा कि इस कुर्ते को खड़े घाट में धोकर लाना है, इसके दाग भी हटाने हैं। कायदा यह है कि धोबी दाग को चूसते हैं और थूक देते हैं। धोबी ने अपनी लड़की से कहा कि मैं भट्टी तैयार करता हूँ, तू इन दागों को चूस ले। लड़की नाबालिग थी। वह दागों को चूसकर थूक बाहर फैंकने की बजाय अंदर करती गई। जैसे-जैसे वह थूक अंदर गया उसके पर्दे खुलने लगे क्योंकि वह पूर्ण सन्तों के हाथ का अमृत था। वह ज्ञान-ध्यान की बातें करने लगी। हर जगह चर्चा होने लगी कि धोबियों की लड़की बहुत ज्ञान-ध्यान वाली है।

राजा पीपा को परमार्थ का शौक था। वह रात के समय धोबियों की लड़की के पास गया। राजा को देखकर लड़की सत्कार के लिए खड़ी हो गई। राजा ने कहा, ''बेटी! मैं तेरे पास राजा बनकर नहीं एक भिखारी बनकर आया हूँ।'' लड़की ने कहा, ''मैं आपको राजा समझकर खड़ी नहीं हुई। मैं इसलिए खड़ी हुई हूँ कि राज, सच्चाई और हकीकत आपके कपड़ो में ही थी।''

जब हमें पता लग जाए कि हमें इतना घाटा हो गया है तो मन हमें पछतावे के गहरे गड्ढे में गिरा देता है। राजा पीपा लोक-लाज

को धिक्कारता हुआ महात्मा रविदास जी के पास जाकर कहने लगा, ''महात्मा जी! मुझसे भूल हो गई मैंने आपके हाथ का अमृत नहीं पिया अब आप मुझ पर दया करें।'' रविदास जी ने कहा, ''उस समय तो दया थी, अब तुझे रास्ता बता देते हैं 'नाम' का भेद दे देते हैं तू प्यार से कमाई कर।''

जिन आत्माओं में इतनी तड़प है वे दुनिया की मान-बड़ाई की खातिर भक्ति नहीं करते, वे परमात्मा से मिलने के लिए भक्ति करते हैं। राजा पीपा भक्ति करके परमगति को प्राप्त हुआ। राजा पीपा का शब्द गुरुग्रंथ साहब में आता है। गुरु अर्जुनदेव जी ने गुरुग्रंथ साहब में उन महात्माओं की बानी दर्ज की है जिनके पास 'पांच-शब्द' का भेद था, जिनकी पहुँच सच्चखंड तक थी।

मैं आपको मिसाल दिया करता हूँ फर्ज करें किसी का बहुत सारा सोना-चाँदी गुम हो जाए या उसके घर में ही दबा हो लेकिन वह बाहर भीख माँगता फिरे तो उसे उस धन से क्या फायदा हो सकता है? अगर उसे उसके घर का भेदी मिल जाए और वह उसे बता दे कि धन कहाँ दबा हुआ है तो वह उस धन को निकालकर अच्छी कारें खरीद लेता है, मकान बनवा लेता है और रहन-सहन के सारे साधन बना लेता है। अब वह सोने-चाँदी का धन्यवाद करे या उसे प्राप्त करवाने वाले का धन्यवाद करे? हम अपने आप ही कह देंगे कि सोना-चांदी तो पहले भी उसके घर में था लेकिन वह सड़कों पर भीख माँगता फिरता था।

इसी तरह परिपूर्ण परमात्मा हम सबके अंदर है। जिस तरह मेहन्दी के पत्तों में रंग समाया होता है, फूल के अंदर खुशबू समाई होती है लेकिन परमात्मा के होते हुए भी हम अनेकों बार कीड़े-पतंगे, गधे-घोड़े, इंसान-हैवान बनते हैं। वह ताकत न किसी

को चोरी करने से हटाती है और न ही बुरे कर्म करने से हटाती है। वह ताकत हमेशा ही हमारे अंदर रमी हुई है लेकिन हम गुरु का धन्यवाद इसलिए करते हैं कि परमात्मा हमारे अंदर ही था जिसके होते हुए हम अनेकों जन्म प्राप्त करते रहे। गुरु ने बिना किसी मुआवजे के परमात्मा को प्राप्त करवाने में हमारी मदद की।

मैं बताया करता हूँ कि पूर्ण सन्त अपनी संगत से सिर्फ भजन-सिमरन की ही आशा रखते हैं। वे यह नहीं कहते कि आप अपनी जायदादें हमारे नाम करवा दें या आपने अपने बाल-बच्चों पर जो खर्च करना है वह हमारे आगे लाकर रख दें। वे हमारे ऊपर मुफ्त में दया करते हैं और परमात्मा से मिलवाने में हमारी मदद करते हैं। पूर्ण सन्त ने हमारे धन-पदार्थ का क्या करना है? उन्हें उनके गुरु ने बहुत कुछ दिया होता है।

उन पै धन है भक्ति नाम का।

मैं बताया करता हूँ कि सन्तमत परियों की कहानी नहीं। आज प्रचार का युग है। लोग आज इश्तिहारों में निकालते हैं कि हमारे पास आएं हम आपका पर्दा खोल देंगे लेकिन पहुँचे हुए सन्त-महात्मा यही कहते हैं:

कहत कबीर शूशां घट बोले, भरया होया कबहूँ न डोले।

भरा हुआ बर्तन कभी भी लोगों के आगे इश्तिहार बाजी नहीं करता कि मैं कुछ हूँ। कबीर साहब कहते हैं:

जिन पाया तिन्हें छिपाया।

अगर हमारे पास मामूली सा भी धन-पदार्थ हो तो हम उसे कितना संभालकर रखते हैं। क्या रूहानियत ही ऐसी है जो हम लोगों से मत्थे टिकवाने के लिए बर्बाद करें? सन्त-महात्मा बिना

किसी मुआवजे के हमारी मदद करने के लिए आते हैं। वे हमारी हर आवाज को सुनते हैं, हमसे दूर नहीं हमारे अंदर 'शब्द-रूप' होकर बैठे होते हैं; उन्होंने हमें उसी 'शब्द' के साथ जोड़ा होता है।

मैं बोलने से पहले सदा ही अपने प्यारे गुरु परमात्मा का जुबान से धन्यवाद करता हूँ लेकिन हम सच्चा धन्यवाद अंदर जाकर ही कर सकते हैं। जब हम उस हस्ती को समझकर उसके साथ जुड़ जाते हैं फिर हमें पता लगता है कि गुरु किस देश से आता है? उसका देश बहुत सुंदर है, वहाँ मौत नहीं, पैदाईश नहीं, अंधेरा नहीं। वह आत्माओं की खातिर ऐसा देश छोड़कर **सुखों-दुखों की नगरी** में बीमारियों का खोल धारण करता है। हमारा जातिय तजुर्बा है कि किसी भी सन्त का इस संसार में आने के लिए दिल नहीं करता लेकिन उसे संसार में भेजा जाता है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''दुनिया कर्मों का लेखा भुगतने के लिए संसार में आती है लेकिन सन्त हमारी मदद करने के लिए आते हैं। जेल के अंदर कैदी भी होते हैं और सुपरिटेंन्डेंट भी होता है लेकिन सुपरिटेंडेंट आजाद होता है, वह जब चाहे आ जा सकता है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जन पर उपकारी आए जीआ दान दे भक्ति लायण हरि स्यौं लैंण मिलाए।

सन्त हमारी आत्मा को दान देने के लिए आते हैं, उनके दान के मुकाबले कोई दान नहीं। सन्त समझाते हैं कि हमारी आत्मा सच्चखंड की वासी है यह अपने घर की याद भूल गई है। वे उस घर की याद ताजा करवाने के लिए आते हैं कि यह **सुखों-दुखों की नगरी** है। हम जैसे कर्म करते हैं उन्हें भोगने के लिए आ जाते हैं। देह में बैठकर हम कभी दुख भोगते हैं कभी सुख भोगते हैं। हम न सुख में खुश है तो दुःख में कैसे खुश हो सकते हैं? सुख के समय

भी हमारा मन अंदर से डरता हैं कि पता नहीं कब मालिक हमारे ऊपर कुरोपित हो जाएगा कहीं ये सुख दुखों में तबदील न हों जाएं!

हम देखते हैं कई डिकटेटर राजा-महाराजाओं पर जब दुखों का पहाड़ टूटता है उस समय रातों-रात दूसरी पार्टी का जोर पड़ जाता है; उन्हें गोलियों से उड़ा देते हैं। जब सोते हैं तब ऊँचे ओहदे पर होते हैं जब उठते हैं तो मौत सामने खड़ी होती है। सन्त हमें बार-बार याद दिलाते हैं कि यह **सुखों-दुखों की नगरी** है। आप इस धाम को छोड़कर अपने सच्चे घर सच्चखंड चलें। वे इससे निकलने में हमारी मदद करते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

जिन तुम भेजे तिन्हें बुलाए सुख सहज सेती घर आओ।

मेरे दयालु गुरु परमात्मा कृपाल जब मेरे आश्रम में आए तब उन्होंने यही शब्द लिया था। उनका लफ्ज़ दिल को छू गया था कि आज लेने वाला आ गया है। आपके आगे स्वामी जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है गौर से सुनेंः

तजो मन यह दुख सुख का धाम, लगो तुम चढ़ कर अब सतनाम।
दिना चार तन संग बसेरा, फिर छूटे यह ग्राम।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप इस **सुखों-दुखों की नगरी** में क्यों आए हैं? अगर हमारे पुण्य ही पुण्य होते तो हम स्वर्गों में बैठे होते अगर हमारे पाप ही पाप होते तो हम नर्कों में सड़ रहे होते। कुछ पुण्य किए कुछ पाप किए तो हमें **सुखों-दुखों की नगरी** में इंसान का जामा मिला।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

पाप पुण्य की है यह नगरिआ सो उबरे जो सतगुरु शरणिआ।

सन्त-महात्मा हमें प्यार से कहते हैं न आपकी यह देह सच्ची है न यह संसार सच्चा है। मौत अटल है पता नहीं कब, किस जगह

इसने गला दबा देना है। उसका उद्धार होगा जो किसी महात्मा की शरण में चला गया है। यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा, ''इस संसार में अचरच चीज़ क्या है?'' युधिष्ठिर ने जवाब दिया, ''संसार में यह अचरच है कि लोग अपने साथियों को मरते हुए, धन-पदार्थ छोड़ते हुए देखते हैं। खुद उन्हें श्मशान भूमि में छोड़कर आते हैं लेकिन फिर भी उन पर कोई असर नहीं होता, वे सोचते हैं कि मौत तो और लोगों के लिए है।''

धन दारा सुत नाती कहियन, यह नहिं आवें काम।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''जब मौत ने गला दबाना है उस समय धन, पुत्र, पोता, दोहिता किसी ने काम नहीं आना। वह धन काम आएगा जो आपने परमार्थ में खर्च किया है। वह पुत्र काम आएगा जो परमार्थ में साथ देता है।'' मुझे मेरे गुरु की कृपा से संसार के कई मुल्कों में जाने का मौका मिला है। हर मुल्क के अलग-अलग ख्याल होते हैं। मैं जब कोलम्बिया गया तो वहाँ के लोगों का दया माँगने का इस तरह का ढ़ग था कि जो भी बुजुर्ग आता वह अपने पुत्र, पोते और दोहितों के लिए अरदास करता। कबीर साहब कहते हैंः

बिना कत्तयां पूणियां भलियां, उलझा भला न सूत।
नाम जपत कन्या भली, साकत भला न पूत।

अगर घर में नेक लड़की रूहानियत में साथ देती है तो वह उस साकत पुत्र के मुकाबले में लाख दर्जे अच्छी है जो साकत पुत्र शराबी-कबाबी है, माता-पिता का दिल दुखाता है

स्वाँस दुधारा नित ही जारी, इक दिन खाली चाम।
मशक समान जान यह देही, बहती आठों जाम।

स्वामी जी महाराज बहुत प्यार से बताते हैं, ''जो राकेट आसमान में जाता है अगर उसमें से शक्ति लीक होने लग जाए तो वह ऊपर अपनी मंजिल पर नहीं पहुँच सकता। इसी तरह जिस गुरु ने हमारे अंदर 'शब्द-नाम' की शक्ति रखी है अगर हम उस शक्ति को दुनिया की मान-बड़ाई में खर्च करते हैं बेशक इत्तर की शीशी का ढक्कन खोलते ही दुनियां को महक आ जाती है लेकिन वह शीशी खाली हो जाती है।''

इसी तरह जो लोग रूहानियत को दिखावे के लिए मान-बड़ाई के लिए मत्थे टिकवाने और लोगों को बेटे देने की खातिर खर्च करते हैं। वे परमात्मा के पुत्र बनने की बजाय परमात्मा के शरीक बनते हैं। ऐसे लोग कहते हैं कि परमात्मा ने तो आपकी किस्मत में कुछ नहीं लिखा था लेकिन हम आपको दे देते हैं; वे बेचारे यहाँ से क्या लेकर जाएंगे?

मश्क में हवा भरी है तो मश्क समुद्र में तैर रही है अगर मश्क में सुराख हो जाता है तो मश्क का सहारा लेने वाला भी पानी की तह के अंदर बैठ जाता है, जान खो बैठता है। जब तक उस मश्क में हवा भरी है उतना समय ही उस मश्क का सहारा लेने वाला समुद्र में तैर सकता है पार भी हो जाता है। हमारी मश्क में दो सुराख हैं जब श्वास ऊपर जाता है तब भी खत्म होता है जब श्वास नीचे आता है तब भी खत्म होता है। हर एक को गिनती के श्वास मिले हैं। यह देह एक दिन खाली हो जाएगी। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नर घाले सब दिनस रात घटन वधन तिल सार।
जीवन लोड़े भ्रम मोह नानक ते ओ गवार।

परमात्मा ने हर एक के अंदर गिनती के श्वास डाले हुए हैं ये श्वास न तिल भर घटते हैं, न ही बढ़ते हैं। हम भ्रम में भूले हुए है

कि शायद! मौत और लोगों के लिए है हम तो जीवित ही रहेंगे; जाने की तैयारी नहीं करते बल्कि रहने के लिए और यत्न करते हैं। हम जीव भूले हुए हैं हमने आज नहीं तो कल यह संसार छोड़कर जाना है। फरीद साहब कहते हैंः

कित्थे तेन्डे माँ-प्यो जिन्ही तू जणया ओए।
तें पासो ओ लद्द गए तू अजे न पतीन्या ओए।

तेरे दादा-पड़दादा और कितने ही आदमी तेरे देखते-देखते चले गए पर तेरे कान पर जूँ तक नहीं रेंगी कि मैंने भी जाना है।

तू अचेत गाफिल हो रहता। सुने न मूल कलाम।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप अचेत हुए बैठे हैं गफलत में है अगर हम दुनिया के किसी कारोबार में कामयाब होने की कोशिश करते हैं तो दिल तोड़कर जान तोड़कर मेहनत करते हैं। क्या हमने कभी परमार्थ के लिए मेहनत की? परमार्थ के लिए हम आलसी और सुस्त हो जाते हैं।''

किसी सन्त ने उसे 'शब्द' किसी ने 'नाम' और किसी ने अंदर की आवाज कहा है। परमात्मा की आवाज सच्चखंड से उठकर हमारे माथे के पीछे धुनकारें दे रही है सबको अपनी तरफ बुला रही है लेकिन हम उस आवाज को नहीं सुन रहे; मन के पीछे लगकर अपनी फरियादें भेज रहे हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सुत्ती पई नभाग सुणे न बाँगा कोए।

स्वामी जी महाराज उसे मूल कलाम कहते हैं कि यह रोज आवाज देती है। अब वक्त है तुझे मनुष्य का जामा मिला है यह परमात्मा को प्राप्त करने का दाँव है।

माया नारि पड़ी तेरे पीछे। क्यों नहिं छोड़त काम।।
बिन गुरु दया छुटो नहिं या से। भजो गुरु का नाम।।

हमारे अंदर आशा तृष्णा ने इतने डेरे लगा लिए हैं, इतनी आग भड़का दी है हर आदमी यही चाहता है कि सारी दुनियां का धन-दौलत मेरे पास आ जाए बेशक दुनिया भूखी मर जाए! गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

लख जोड़े करोड़ जोड़े, मन परे परे को होड़े रे।

लाख, करोड़ और अरबों से भी तृप्ति नहीं। आप आग के ऊपर जितनी लकड़ियां डालेंगे आग उतनी ही ज्यादा भड़केगी। जितनी तृष्णा बढ़ाएंगे उतनी ही बढ़ जाएगी।

मैं बताया करता हूँ कि मेरा एक रिश्तेदार पुलिस में बड़ा अफसर था अच्छा आदमी था। उसने मुझसे सवाल किया, ''मैं पुलिस के महकमें में हूँ आप साधुओं के महकमें में हैं। आप मुझे बताएं कि इंसान किस चीज़ से तृप्त होता है?'' मैंने उसे प्यार से कहा कि मेरे तजुर्बे में इंसान दो चीज़ों से तृप्त होता है। पहला सब्र है, जिसमें सब्र है वह अपने आपको शहंशाह समझता है। चाहे उसके पास बाँधने के लिए लंगोटी भी नहीं अगर उसमें सब्र है तो वह अपने आपको राजा इन्द्र से भी ज्यादा धनी समझता है। उसे पता है कि मैं अपने साथ क्या लाया था? मैंने मुटठी बंद करके जन्म लिया था और हाथ पसारकर चला जाऊँगा या जिसे मार पड़े अगर कोई डंडे से मार रहा हो वह कहता कि मुझे और न मारें।

मैंने उसे बताया कि प्यारेया! सब्र 'नाम' की कमाई से आता है। आप गेंद को जितना ज्यादा दबाएंगे वह उतनी ज्यादा उछलती है। आप दो दिन सब्र करें तीसरे दिन आपका मन आपको भटका

देगा। अंदर जाकर पता चलता है कि काल के दूत नर्कों में जीवों को कितने दण्ड देते हैं, कितनी मार पड़ती है।

महात्मा डराने के लिए ये बातें नहीं कहते वे जो आँखो से देखते हैं बयान करते हैं। जिन्होंने संसार में गलतियाँ की होती है जो मर्द पराई औरतों को देखते हैं या जो औरतें पराए मर्दों को देखती हैं उन्हें गर्म खम्बों से चिपटाया जाता है। ऐसे-ऐसे खम्बे है अगर एक खम्बा भी संसार में आ जाए तो यह संसार जल जाए। जो यहाँ जुल्म करते हैं उन्हें उन गर्म खम्बों से चिपटाया जाता है।

मैंने कई चोरों को मार पड़ते हुए देखा है लेकिन वे ढीठ हो जाते हैं। हमें जिंदगी में बुरे कर्मों की भी मार पड़ती है उस समय हम तड़पते हैं दुखी होते हैं। घर में बीमारी आ जाती है ईलाज करवाने के लिए पैसा नहीं होता। बच्चे पैदा होते हैं उनके पहनने के लिए कपड़े नहीं खाने के लिए अनाज नहीं फिर तड़पते हैं।

प्यारेयो! हम अपने आप डर और सब्र प्राप्त नहीं कर सकते। हमें गुरु की दया की जरूरत है। सन्त हमें रास्ता बताते हैं कि ईमानदारी और मेहनत से नाम की कमाई करें।

गुरु का ध्यान धरो हिरदे में। मन को राखो थाम।।
वे दयाल तेरी दया विचारें। दम दम करें सहाम।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''तीसरे तिल पर गुरु का स्वरूप रहे, जुबान पर उसका सिमरन रहे और तन को भी उस तरफ लगाकर पवित्र कर लें इस तरीके के हम बच सकते हैं। सन्त गरीब नवाज होते हैं कोई गरीब बने, वे अपने बिरद की लाज रखते हैं। कोई सन्तों की शिक्षा पर अमल करके देखे फिर पता लगता है कि वे अपनी ड्यूटी निभाते हैं कि नहीं? जो लोग भजन-सिमरन करते

हैं गुरु का ध्यान पका लेते हैं अंत समय में उन्हें इंतजार नहीं करना पड़ता कि गुरु आएगा या नहीं?'' आप किसी सतसंगी की मौत के समय देखें! लेकिन शर्त यह है कि उस समय कोई बेसतसंगी पास न हो फिर आप उससे पूछें कि गुरु आया है या नहीं? वह जरूर आपको बताकर जाएगा।

आमतौर पर हम किसी को शान्ति से मरने भी नहीं देते। उस मुश्किल समय में उसकी जान पर बनी होती है। बच्चे रोते-बिलखते हैं। पत्नी कहती है कि दुश्मन! किसके आसरे छोड़कर जा रहा है? अगर पत्नी जाती है तो मर्द रोता है हम उसका ध्यान अंदर लगने की बजाय बाहर बाँट लेते हैं। वह हमें देखकर रोता है और हम उसे देखकर रोते हैं। गुरु फिर भी दया विचारता है कि यह निर्मल जीव है, वह जरूर दया करता है।

छोड़ भोग क्यों रोग बिसावे। या में नहिं आराम।।
गुरु का कहना मान पियारे। तो पावे विश्राम।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''बहुत जिंदगी बर्बाद कर ली है। हमें हर जामें में भोग भी मिलते हैं, प्रालब्ध के मुताबिक बच्चे-बच्चियां और दुख-सुख भी मिलता है लेकिन इंसान का जामा परमात्मा की भक्ति के लिए है।'' महात्मा बताते हैं:

पंजे विषय भोगंदया उम्र गंवाई यार।
ऐह मन न रजया हुण कद रजसी यार।

जो सेवक सन्तों का कहना मानता है वह जरूर ठिकाने लगता है। गुरु अपने वचन का बंधा हुआ जीव के साथ होता है।

दुख तेरा सब दूर करेंगे। देंगे अचल मुकाम।
राधास्वामी कहत सुनाई। खोज करो निज नाम।।

जो बच्चा टीचर का कहना मानता है टीचर भी उसकी तरफ तवज्जो देता है। इसी तरह जो सन्तों का कहना मानकर अपनी जिदंगी को पवित्र बनाता है 'शब्द-नाम' की कमाई करता है सन्त भी उसकी तरफ पूरी तवज्जो देते हैं। कोई उनका कहना मानकर देखे! वे हमेशा मदद के लिए तैयार रहते हैं।

सन्त-महात्मा हमें यह नहीं कहते कि आप घर-बार छोड़ दें, पुत्र-पुत्रियों को छोड़ दें, जंगल-पहाड़ या मंदिर-मस्जिद में जाकर छिप जाएं। सन्त प्यार से समझाते हैं कि आप घर में रहकर भक्ति कर सकते हैं। घर में आपकी सारी जरूरतें पूरी हो जाएंगी। अगर आप त्यागी बन गए हैं तो भी आपका शरीर खाना मांगेगा, कपड़ा मांगेगा और छत भी मांगेगा। एक बीवी के हाथ का खाना छोड़कर अनेकों के आगे हाथ फैलाना पड़ेगा। आपने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार नहीं छोड़ा लेकिन साधु होने का अहंकार जरूर हो जाता है फिर गृहस्थियों को धमकाकर उनसे पैसे इकट्ठे करते हैं।

सन्त-महात्मा प्यार से कहते हैं कि आप घर में रहकर अपने दस नाखूनों से रोजी-रोटी कमाकर खाएं उसमें से कुछ लंगर में भी डालें, किसी गरीब की मदद भी करें और अपना बोझ दूसरों पर न डालें। आपने घर-बार नहीं छोड़ना, मन को पलटना है। घर में रहकर ही परमात्मा को समझना है; परमात्मा की आवाज को सुनना है और उसकी भक्ति करनी है।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि इस **सुखों-दुखों की नगरी** को छोड़कर नेहचल धाम सच्चखंड पहुँचे। सच्चखंड वह ठिकाना है जो प्रलय महाप्रलय में नहीं गिरता। इसलिए हमें भी चाहिए कि स्वामी जी महाराज के कहे मुताबिक 'शब्द-नाम' की कमाई करें।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

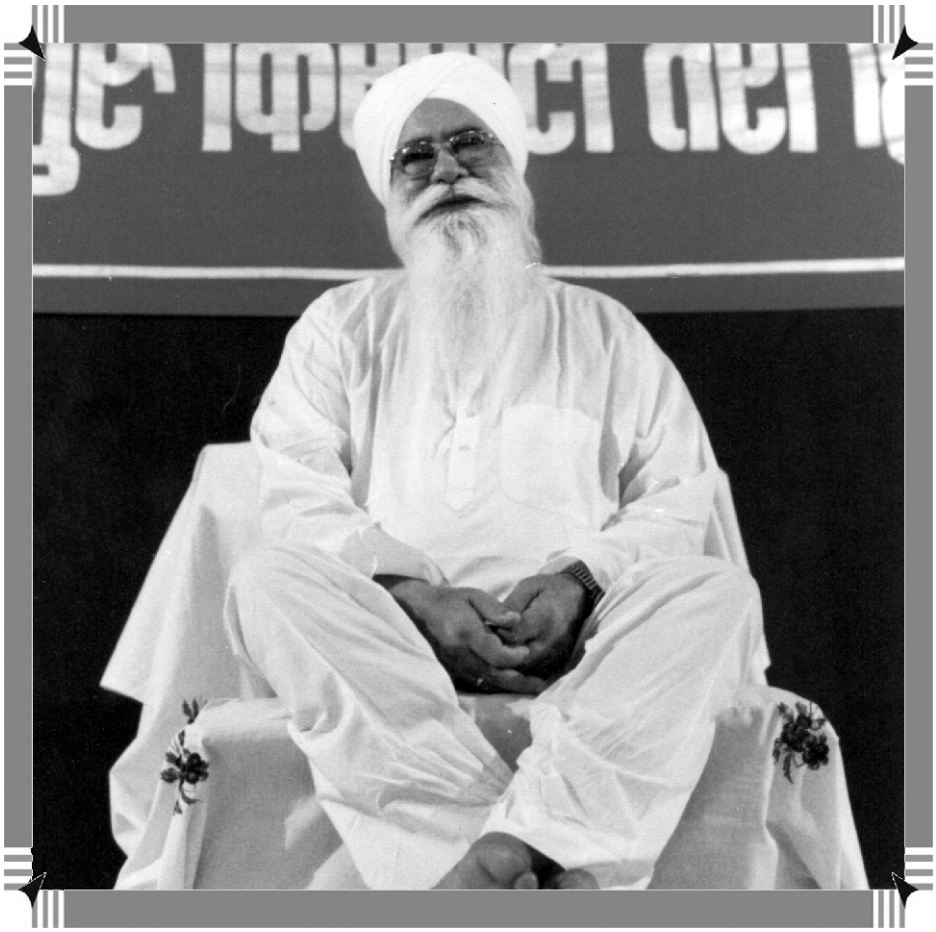

एक प्रेमी : *हम दुनिया के प्यार, मोह, बंधन और परमार्थ के बीच किस तरह संतुलन बना सकते हैं?*

बाबाजी : हर सतसंगी की कुछ समस्याएँ होती है। ख्याल का फैलाव होता है कभी भजन में ख्याल टिक जाता है तो कभी नहीं

टिकता। कई बार अंदर बहुत कुछ देख लेते हैं कभी कुछ भी नजर नहीं आता। हर सतसंगी को मन के साथ संघर्ष करना पड़ता है।

मैं यही समझाता हूँ कि हमें अपने अंदर ऐसे ख्याल पैदा नहीं करने चाहिए जो हमें तीसरे तिल से दूर ले जाते हैं। हमें हमेशा तीसरे तिल पर ख्याल रखकर सोचना चाहिए। सतसंगी को बात करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि मैं बाहर फैलाव की तरफ तो नहीं जा रहा। मेरी बात में क्रोध या ईर्ष्या तो नहीं या मेरी बात सामने वाले को अच्छी लगेगी या नहीं? चाहे हम घर में हैं या बाहर हैं हमें हर प्रेमी के साथ ऐसी बातों को ध्यान में रखकर पेश आना चाहिए।

प्यारेयो! हम किसी भी तरीके से प्यार का इज़हार नहीं कर सकते क्योंकि प्यार महसूस करने की चीज़ है इसे आत्मा महसूस करती है। जब हम अपने ख्याल ठीक बना लेते हैं और तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाते हैं फिर हमारे दिल में कुल दुनिया के लिए जगह बन जाती है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''दिल को दिल से राह होती है अगर हम किसी के लिए अच्छा सोचते हैं, उसकी तरफ अच्छी भावना भेज रहे हैं तो वह भी हमारे लिए अच्छा ही सोचेगा और हमारी तरफ अच्छी भावनाएं भेजेगा।''

एक बार अकबर ने अपने वजीर बीरबल से यही सवाल किया कि हमें यह कैसे पता लगता है कि दूसरा आदमी हमारे लिए अच्छी या बुरी भावना रखता है? बीरबल ने कहा कि आप खुद ही तजुर्बा करके देख लें। सामने से एक जट्ट चला आ रहा था। बीरबल ने अकबर से कहा कि आप इसके लिए कुछ भी अच्छा या बुरा सोचें?

अकबर के दिल में ख्याल आया कि मैं इस जट्ट को पकड़कर जेल में डाल दूँ और पुलिस से कहूँ कि इसकी पिटाई करे। सामने से जो जट्ट आ रहा था उसके दिल में ख्याल आया अकबर की इतनी बड़ी-बड़ी मूछें हैं अगर मेरे बस में हो तो मैं इसकी मूछें उखाड़ दूँ और इसे ज्यादा से ज्यादा सजा दूँ। जब वह जट्ट पास आया तो बीरबल ने पूछा कि जब तूने इन्हें देखा तो तेरे दिल में क्या ख्याल आया? हम जानते ही है कि जट्ट लोग बेधड़क बोली बोलते हैं। उस जट्ट ने कहा कि मैंने यह सोचा था कि मैं इसकी मूछें उखाड़ दूँ और इसे बहुत सजा दूँ। अकबर मान गया कि ख्याल की ख्याल से तर्जमानी हो जाती है।

प्यारेयो! अगर हम किसी के लिए अच्छी भावना रखेंगे तो वह भी हमारे लिए अच्छा ख्याल और अच्छी भावना रखेगा। सतसंगी के अंदर से प्यार की खुशबू नाम की खुशबू निकलनी चाहिए। उसके चेहरे को देखकर दूसरा आदमी अंदाजा लगा सके कि यह किसी महान गुरु का शिष्य है। इसका रहना और बैठना सब ठीक है। जिस धरती पर सतसंगी रहता है उस धरती को भी मान होना चाहिए कि मेरे ऊपर कोई सन्तों का सेवक रहता है।

हमारा इतिहास गवाह है कि काल ने किस तरह संसार को रचा हुआ है। आज तक किसी ने भी सन्तों और उनके सेवकों के साथ अच्छा बर्ताव नहीं किया। सन्तों ने सदा ही ऐसे लोगों के लिए प्रार्थना की है, ''हे परमात्मा! तू इन्हें बख्श दे, ये लोग अज्ञानवस होकर ऐसा कर रहे हैं।''

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल सदा यह कहा करते थे, ''अगर बुरा आदमी बुराई नहीं छोड़ता तो भला आदमी भलाई क्यों छोड़े?'' कबीर साहब ने भी यही कहा है कि सन्त और परमात्मा में कोई

भेद नहीं। कबीर साहब महान सन्त थे कुलमालिक थे। आप कभी भी इंसानी जामे से नीचे नहीं गए। महान आत्माओं को ही आपके दर्शनों का मौका मिला और आपसे 'नामदान' प्राप्त हुआ। इतिहास बताता है कि आपको कष्ट देने के लिए या मरवाने के लिए उस समय की हुकूमत ने कोई भी मौका हाथ से नहीं जाने दिया।

कबीर साहब मुसलमान जाति के जुलाहा खानदान में आए। उस समय लोदी सिकन्दर हिन्दुस्तान पर राज्य करता था, वह भी मुसलमान था। उसने कबीर साहब को जंजीरों से बाँधकर गंगा में फैंक दिया लेकिन परमात्मा की दया से जंजीरें टूट गई और कबीर साहब तैरते हुए चौंकड़ी लगाकर पानी से बाहर आ गए जैसे कोई साधु मृगशाला पर बैठकर भजन करता है।

दूसरी बार लोधी सिकन्दर ने कबीर साहब को गठरी में बाँधकर मस्त हाथी के आगे फैंक दिया लेकिन हाथी कबीर साहब को नमस्कार ही करता रहा। न्याय करने वाला काजी महावत को कोसता रहा कि तू हाथी को अंकुश क्यों नहीं लगाता। कबीर साहब ने अपनी लेखनी में इसका जिक्र इस प्रकार किया है:

क्या अपराध सन्त है कीन्हा, बाँध पोट कुंचर को दीन्हा।
कुंचर पोट ले ले नमस्कारा, बूझे नहीं काजी अंधियारा।

लोधी सिकन्दर अपने आपको पक्का मुसलमान और मौहम्मद साहब के ऊपर ईमान लाने वाला बादशाह कहलवाता था। सच्चा और पक्का मुसलमान वही है जो मक्का की यात्रा करके आए। मौहम्मद साहब को मानने वालों ने कभी पवित्र कुरान शरीफ को पढ़कर नहीं देखा कि मौहम्मद साहब में कितनी नम्रता थी।

एक बार मौहम्मद साहब अपने सेवक के साथ बाजार में गए। वहाँ एक आदमी जोर-जोर से गालियाँ निकाल रहा था। मौहम्मद

साहब चुप करके खड़े रहे। आपके सेवक ने कहा कि यह आदमी आपको इतनी गालियाँ निकाल रहा है और आप कुछ नहीं बोल रहे? मौहम्मद साहब ने कहा कि कोई बात नहीं। जब वह आदमी गालियाँ निकालकर चुप हो गया तो मौहम्मद साहब ने अपने सेवक से कहा, ''इससे पूछ कि इसे किस चीज़ की जरूरत है? शायद मैं इसके काम आ सकूँ।'' सेवक यह सुनकर बहुत हैरान हुआ।

प्यारेयो! हम जिनके नाम पर धर्म की स्थापना करते हैं उनके अंदर कायनात के लिए बहुत हमदर्दी होती है लेकिन जब हम उन मालिक के प्यारों और उनके सेवकों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं तो क्या हम उनके सेवक कहलवा सकते हैं?

महात्मा संसार में आकर सच्चा और साधारण जीवन व्यतीत करते हैं और हमें भी ऐसा ही जीवन व्यतीत करने के लिए कहते हैं। हम ऐसा काम न करें जिससे हमारे माता-पिता और हमारी कौम बदनाम हो। सन्त हमें अपने आपको सुधारने पर जोर देते हैं। हम ऐसा तभी कर सकते हैं जब हम बुरे ख्यालों को बाहर निकालकर तीसरे तिल पर एकाग्र होकर 'शब्द-नाम' से जुड़ जाए।

आप सदा ऐसी बोली बोलें जिससे आपका मन तीसरे तिल से बाहर न जाए। जब हम तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाते हैं तो स्वाभाविक ही हमारे मन से दुनिया का मोह खत्म हो जाता है। हम जब तक गुरु के नूरी स्वरूप तक नहीं पहुँचते तब तक दुनिया की मौहब्बत नहीं छोड़ सकते।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मतलब तो सोना पहनने से है चाहे कंगन, कान की बाली या छल्ला तुड़वाकर इसका गले में पहनने वाला हार बनवा लें।'' हिन्दुस्तान में पहले सोना

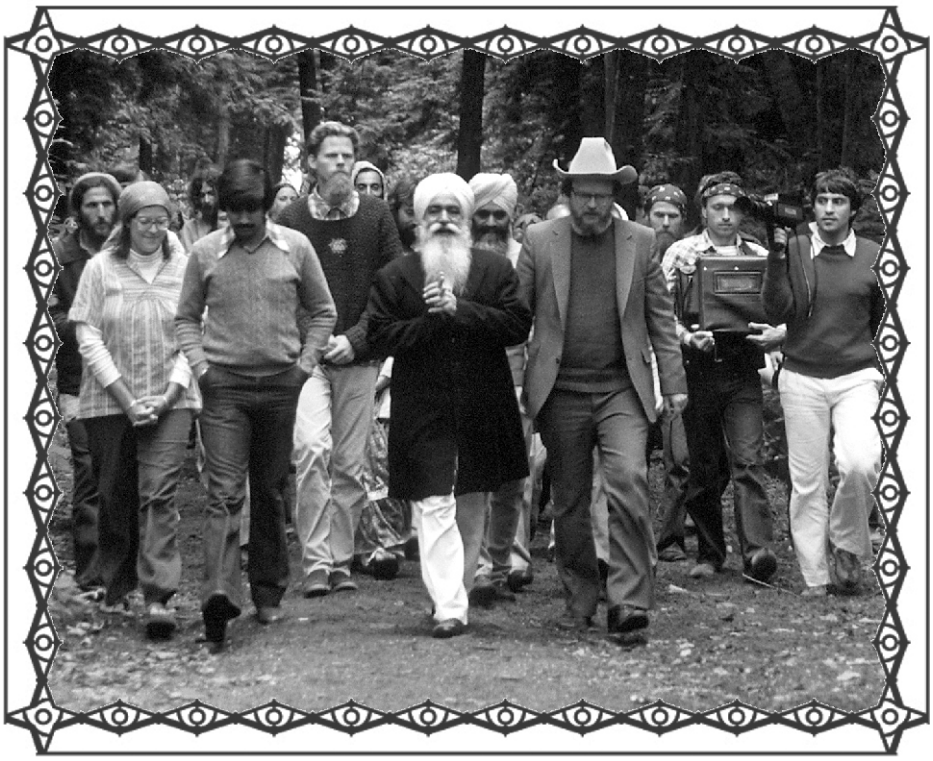

पहनने का बहुत रिवाज़ होता था। सतसंगी को सब तरफ से ख्याल हटाकर तीसरे तिल पर 'नाम' के साथ जुड़ जाना चाहिए। हमें हमेशा ही अपने घर की तैयारी में लग जाना चाहिए अगर हम सारा दिन बाल की खाल निकालते रहेंगे कि दुनिया में कैसे रहें, कैसे बोलें या कैसे अपना आप सबको बताएं तो हम कभी भी कामयाब नहीं होंगे। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जब लग दुनिया रहिए, कुछ सुनिए कुछ कहिए।

अपनी बात प्यार से किसी को सुनानी भी चाहिए अगर कोई नेक सलाह पूछता है तो सलाह देनी भी चाहिए। अगर हम सारी जिंदगी किसी को यह भरोसा देते रहें कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ,

तुम्हारा हो चुका हूँ तो यह समय बर्बाद करने वाली बात है। जब हम किसी से अच्छा व्यवहार करेंगे तो उसका दिल खुद ही गवाही देगा कि इसका मेरे प्रति कितना प्यार और लगाव है। वह भी हमसे प्यार करेगा, ऐसा ही गुरु और शिष्य पर लागू होता है।

अगर मैं भी सारी जिंदगी इसी ख्याल में रहता और महाराज जी से कहता कि मैं आपसे बहुत प्यार करता हूँ, मैं आपका हो चुका हूँ और आपसे पूछता कि क्या आप मुझे प्यार करते हैं? तो मैं कभी भी कामयाब नहीं हो सकता था अगर कोई शिष्य ऐसा करता है तो वह कामयाब नहीं हो सकता। हमारा फर्ज है कि हम अपनी ड्यूटी पूरी करें। गुरु हमेशा अपनी ड्यूटी पूरी करता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जिस घर के बाहर बैल बँधा है उस घरवालों को पता है कि कब इस बैल को पानी पिलाना है और कब धूप से छाया में करना है। मजदूर जिसके खेत में काम करता है उस मालिक को पता है कि इसे मजदूरी देनी है।

इसी तरह गुरु हमारे प्यार के बारे में जानता है, वह हमारे श्वास-श्वास का वाकिफ होता है। गुरु 'नाम' देकर कभी नहीं भूलता। सब संतसगी उसके दिल पर लिखे होते हैं। गुरु की मोहर हमारी आत्मा पर लगी होती है। चाहे हम कितना भी जोर लगा लें गुरु आत्मा की डोरी कभी नहीं छोड़ता। ओछा आदमी अपनी सफाई पेश करता है अपने गुणों का इज़हार करता है लेकिन समझदार आदमी समय की इंतजार करता है कि समय अपने आप ही बता देगा। हमें ये बातें जुबान से इज़हार नहीं करनी चाहिए।

सच्चे शिष्य की यह निशानी है कि वह पब्लिक में अपने गुरु को भगवान कहकर जाहिर करता है। मूर्ख अपनी बड़ाई सुनकर

बहुत खुश होते हैं, फूले नहीं समाते लेकिन समझदार मुँह पर बड़ाई सुनकर उदास हो जाता है। गुरुमुख कभी भी अपनी प्रशंसा नहीं करवाते। यह एक सच्चाई है कि जो महात्मा अंदर जाता है वह कभी भी अपनी प्रशंसा का शब्द नहीं बोलने देता, वह खुद अपने गुरु की महिमा गाता है और हमें भी अपने गुरु की महिमा गाने पर मजबूर करता है; हमारे अंदर उत्साह पैदा करता है।

आपने 'नाम' लिया है। नामदान के समय आपको नाम के फायदे बताए जाते हैं। सन्त जब भी संसार में आते हैं वे अपने सेवकों को 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ते हैं बेशक सन्त नाम देने के बाद चोला छोड़ जाएं फिर भी सेवक की तरक्की नहीं रुकती। ऐसे कई तजुर्बे हैं जो यह साबित करते हैं कि गुरु के जाने के बाद भी सेवक की तरक्की होती रहती है।

गुरु सदा ही अंदर दया करने के लिए और अपना प्यार बख्शने के लिए तैयार रहता है कि कब सेवक तीसरे तिल पर पहुँचे और मैं उस पर दया करूँ। उसे अपने घर का वारिस बनाऊँ और जीते जी बताऊँ कि तू कितने बड़े घर का वारिस है तेरा घर सच्चखण्ड है। शिष्य अंदर जाकर खुद ही महसूस करता है कि गुरु ने मेरे लिए कितनी तकलीफें उठाई फिर शिष्य को ज्ञान होता है कि गुरु उसके लिए क्या-क्या करता है? गुरु के अंदर अपने सेवकों के लिए बहुत प्यार और हमदर्दी होती है।

एक प्रेमी: *प्यारे महाराज जी! अगर हम अपने माता-पिता या रिश्तेदारों से उनकी मौत से पहले उनका पैसा, मकान या जमीन की वसीयत ले लेते हैं तो हमें किस हालत में उन चीज़ों को अपने पास रखना चाहिए या उन चीज़ों को आगे दान कर देना चाहिए?*

बाबाजी: हिन्दुस्तान में यह कानून है कि बच्चे ही माता-पिता की जायदाद और पैसे के वारिस होते हैं इसमें पाप या पुण्य नहीं समझा जाता क्योंकि उन्होंने भी विरासत में अपने माता-पिता की जायदाद संभाली होती है। अगर हम किसी और की जायदाद प्राप्त करते हैं जिसके हम हकदार न हो, हम उसकी सेवा करें तो वह हमारे ऊपर खुश होकर अपनी जायदाद हमारे नाम कर दे तो यह हम एक प्रकार की सेवा का फल प्राप्त करते हैं।

अगर हमें किसी की सेवा करने का मौका मिलता है और वह खुश होकर हमें कुछ देता है तो उसे प्राप्त करने में कोई हर्ज नहीं। अगर हम उस धन को अच्छी जगह लगाते हैं या उससे किसी की मदद करते हैं तो अच्छी बात है अगर हम उस पैसे को बुरी तरफ लगाते हैं तो हमारा बुरा कर्म बनेगा। धोखे से धन, जायदाद या चोरी का माल प्राप्त करना बुरा है।

मैंने आसा जी की वार *(परमात्मा के रंग)* पर सतसंग किए थे जिसमें यह कहानी आई थी। जब गुरु नानकदेव जी इस संसार में मौजूद थे उस समय लाहौर में गंगू और मंगू नाम के दो ब्राह्मण थे। यह रिवाज़ है अगर किसी का बुजुर्ग गुजर जाए तो एक साल के बाद लोग उसके नाम पर श्राद्ध करते हैं, पंडितों को बुलाकर खाना खिलाया जाता है और दान दिया जाता है। धीरे-धीरे पंडित लालची होते गए तो लोगों की श्रृद्धा उस तरफ से कम होती गई।

पंडितों ने गंगू और मंगू से कहा कि अपने पितृों का श्राद्ध करें वे दरगाह में भूखे हैं। गंगू-मंगू ने कहा कि हमारे पास पैसे नहीं और हममें इतनी ताकत भी नहीं कि हम श्राद्ध कर सकें। पंडितों ने उनसे कहा, ''हमें इस बात से कोई मतलब नहीं चाहे तुम चोरी करो चाहे कोई बुरा कर्म करो लेकिन हमें श्राद्ध खिलाओ और

दाँत घिसाई भी दो।'' गंगू और मंगू ने एक साहूकार के घर जाकर चोरी की और धन-पदार्थ चुराकर ले आए।

जब गुरु नानकदेव जी लाहौर गए तो उन्हें पता लगा कि पंडितों ने इस तरह की लीला रचाई हुई है। गुरु नानकदेव जी ने गंगू और मंगू के घर जाकर पूछा, ''यह सब क्या है?'' उन्होंने कहा कि हम बहुत गरीब हैं। पंडितों ने हमसे कहा कि चाहे कहीं से भी धन-पदार्थ लाओ लेकिन हमें अच्छा खाना खिलाओ इसलिए हमने साहूकार के घर चोरी करके इन्हें खाना खिलाया है ये कहते हैं कि यह खाना तुम्हारे पितृों को पहुँचेगा।

गुरु नानकदेव जी ने गंगू-मंगू से पूछा, ''क्या तुम्हें यकीन है कि यह खाना तुम्हारे पितृों को पहुंच जाएगा? तुम जिनका धन चुराकर लाए हो उनके पितृ आगे हैं वे अपनी वस्तु को पहचान लेंगे कि यह वस्तु हमारे घर की है। वे तुम्हारे पितृों को भी चोर बना देंगे।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

अग्गे वस्तू पछानीए, पितृों चोर करे।
वडीए हत्थ दलाल के मुस्सी ऐह करे।
नानक अग्गे सो मिले जे खट्टे घाले दे।

गुरु नानकदेव जी ने इस कुरीति को मिटाने के लिए काफी कुछ कहा है कि आप जीते जी पितृों की इज्जत करें, उन्हें अच्छा भोजन दें यही आपकी सेवा है; मरने के बाद वहाँ कुछ नहीं पहुँचता। बिना पते के पत्र नहीं पहुँचता तो पंडितों के मुँह में खीर डालने से आगे दरगाह में कैसे चली जाएगी? इस तरह का दान करना तो पितृों को दरगाह में चोर बनाने के बराबर है। जिन पंडितों ने इस तरह की लीला रचाई है दरगाह में उनके हाथ काटे जाते हैं कि तुम लोगों ने यह सब क्यों किया, क्या तुम्हें इनके पितृ मिले थे?

हम जो अच्छे-बुरे कर्म कमाते हैं आगे दरगाह में जाकर हमें वही मिलते हैं। अगर पिता वसीयत न भी करवाए तो भी जायदाद बच्चों को ही मिलती है क्योंकि जायदाद पर बच्चों का हक़ होता है लेकिन धोखे से पिता की जायदाद प्राप्त करना या आखिरी समय में पिता को कोई नशे का टीका लगवाकर वसीयत अपने नाम पर करवाने को बुरा माना जाता है।

आज से सात-आठ साल पहले का वाक्या है उस समय मैं 77 आर.बी में रहता था। वहाँ एक लड़के ने सोचा कि मैं पिता से अपने नाम पर वसीयत करवा लेता हूँ। वे तीन भाई थे। उसने पिता से कहा कि आप पंजाब की जायदाद की वसीयत मेरे नाम कर दें। वह बुजुर्ग काफी समझदार था उसने कहा कि मुझे सन्तों के पास ले चलो। वह लड़का अपने पिता को ऊँट गाड़ी पर बिठाकर मेरे पास लेकर आया। वह बुजुर्ग मेरे पास आकर बम की तरह फट पड़ा और कहने लगा, ''मैं इस लड़के को साधु समझता था कि यह सतसंगी है नाम जपता है। हर रोज आँखें बंद करके बैठता है लेकिन अफसोस! इसने मुझे इन्जेक्शन लगवाया है ताकि मैं वसीयत इसके नाम कर दूँ। आप मुझे इससे बचाएं।'' मैंने उस लड़के को समझाया कि यह तेरे लिए जायज़ नहीं है।

प्यारेयो! इस तरह जायदाद प्राप्त करने से परहेज करना चाहिए। परमात्मा ने इतना बड़ा संसार बनाया है वह सबकी परवरिश कर रहा है, सारे संसार को रोज़ी-रोटी दे रहा है। हमें परमात्मा पर भरोसा करना चाहिए अगर हम किसी की सेवा करें तो उससे अफजाने की इच्छा न रखें।

***

धन्य अजायब

16 पी.एस.आश्रम में अगले सतसंग का कार्यक्रम इस प्रकार हैं:

31 मार्च से 2 अप्रैल 2013

दिल्ली में सतसंग का कार्यक्रम

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से दिल्ली में 17, 18 व 19 मई 2013 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में प्रार्थना है कि सतसंग में पहुँचकर सन्त वचनों से लाभ उठाएं।

कम्युनिटी हाल,
भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार,
(नज़दीक पीरा गढ़ी चौक)
नई दिल्ली - 110 087
फोन - 98 18 20 19 99 व 98 10 21 21 38

भजन-सिमरन और सतसंगो के कार्यक्रम की अधिक जानकारी के लिए www.ajaibbani.org पर अपना नाम रजिस्ट्र करें।

मासिक पत्रिका **अजायब बानी** से संबधित पत्र व्यवहार के लिए कृप्या सन्त बानी आश्रम, 16 पी.एस., रायसिंह नगर - 335 039 जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान) पर संपर्क करें।